जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 100

हंस

अगस्त 2026

आदिवासी विशेषांक (भाग-1)

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-478 वर्ष : 41 अंक : 1 अगस्त 2026

आवरण : सी.आर. हेम्ब्रम

हंस

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

अतिथि संपादक : अनुज लुगुन

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
सहायक संपादक
शोभा अक्षर
संपादन सहयोग
माने मकर्तच्यान
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
सोशल मीडिया प्रबंधक
नाज़रीन
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
कृष्ण कुमार अजनबी, अजय कुमार सिन्हा, बलविन्द्र सिंह 'बलि', महेन्द्र सिंह, अनुभूति गुप्ता, रोहित प्रसाद, आस्था

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

इस अंक का मूल्य : 100 रुपए
मूल्य : 75 रुपए प्रति
वार्षिक रजिस्टर्ड : 1250 रुपए (व्यक्तिगत)
संस्था/पुस्तकालय : 1500 रुपए (संस्थागत)

वार्षिक पीडीएफ : 600 रुपए (व्यक्तिगत)
पीडीएफ : 700 रुपए (संस्थागत)
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

अगस्त, 2026

इस अंक में

अतिथि संपादकीय
4. आदिवासी अभिव्यक्ति... : अनुज लुगुन

अपना मोर्चा
9. पत्र

न हन्यते
17. एकर का भरोसा, चोला माटी का : अशोक वाजपेयी
20. लीक पर चलना नहीं जानती थीं तीजन बाई: नीलांशु रंजन
22. अपनी नाक खुद संभाले यह समाज : अनामिका अनु

वैचारिकी
24. नृतत्वशास्त्र और नृवंशविज्ञान... : प्रमोद मीणा
30. सबाल्टर्न अध्ययन पद्धति..: गंगा सहाय मीणा
36. चाय की चुस्की में पनपता... : दीपक कुमार
41. मीडिया में आदिवासी... : शताली शेडमाके
44. आदिवासी पुरखा गीतों की... : वंदना टेटे
46. आदिवासी साहित्य में मिथक : हरिराम मीणा
51. असुरों की सांस्कृतिक... : सावित्री बड़ाईक

कहानियां
56. न्योकुम फेस्टिवल खत्म हो गया : जमुना बीनी
64. धधकती जमीन : ज्ञानचन्द बागड़ी
72. फिर एक कोड़ा राजी : अनिशा मिंज
76. वह राम नहीं था : विनोद कुमार
82. भूख : उषाकिरण आत्राम
86. पंद्रही का आसरा : शिखा मिंज

उपन्यास अंश
89. सपनों की सलवटों पर अग्निवर्षा : रणेंद्र

संस्मरण
93. पकरीटोली से अंडमान तक : प्रवीण बसंती 'खेस्स'
100. एक आदिवासी ने जब यूरोप से भारत को देखा: जसिंता केरकेट्टा

आदिवासी सिनेमा
115. व्यसन, सांस्कृतिक विमुखीकरण और आदिवासी सिनेमा : निरंजन कुमार कुजूर

विश्व आदिवासी कविता
110. केविन जॉन गिल्बर्ट

भारतीय आदिवासी कविता
112. भुजंग मेश्राम
114. विनायक तुमराम, अजेय
116. सुनीता कटोच
117. मेन्नोक लोवांग
118. जितेन्द्र वसावा
119. वीरा राठोड
121. रेखा खराड़ी

जन आंदोलन
123. तीजमाली: पहाड़, कॉर्पोरेट... : हेमंत दलपति

रेतघड़ी
128

आदिवासी अभिव्यक्ति की ऐतिहासिकता को समझना जरूरी है

अनुज लुगुन

5 जुलाई, 2026. हम झारखंड के खूंटी जिले के तपकरा गांव में आयोजित कोइलकारो जन संगठन द्वारा आयोजित जनसभा में शामिल होने जा रहे हैं. हर साल 5 जुलाई को कोइलकारो जन संगठन के द्वारा जल विद्युत परियोजना से होने वाले विस्थापन के विरोध में 'संकल्प दिवस' का आयोजन किया जाता है. हम अपने गांव के जंगल से निकलकर सारंडा के घने जंगलों से होकर तपकरा जा रहे हैं. साल के पेड़ों का जंगल, विशालकाय पहाड़ बड़े पेड़ों और वनस्पतियों से घिरे हुए, उनके बीच-बीच में एकाध मिट्टी के घर और उनके साथ जंगली हाथियों का परिवार. यहां की प्राकृतिक सुंदरता का कोई जवाब नहीं है. यहां की जनता को कुदरत ने इतनी सुंदर प्रकृति का उपहार दिया है, यह कहना न सिर्फ यहां के लोगों की चेतना का उपहास उड़ाना होगा बल्कि यह बाहरी 'दिकु मानसिकता' ही कहलाएगी. प्राकृतिक सुंदरता हर भूगोल को कुदरत ने दी है लेकिन हर भूगोल की जनता ने प्रकृति की रक्षा नहीं की है.

यहां की प्राकृतिक सुंदरता बरकरार है क्योंकि यहां के लोगों की चेतना में प्रकृति 'दृश्य' नहीं बल्कि 'जीवन' है. यह यहां की आदिवासी बहुल जनता की सामूहिक चेतना का हिस्सा है. यहां प्रकृति इसलिए बची हुई है क्योंकि यहां की आदिवासी-मूलवासी जनता ने प्रकृति को बचाने के लिए अपनी जान की कुर्बानी दी है. यहां की जनता ने, जिसे राजधानियों में बैठे लोग गरीब और पिछड़ा हुआ समझते हैं, औपनिवेशिक समय से बिना किसी समझौते के जंगलों और जमीन की रक्षा की है. यह महान् क्रांतिकारी धरती आबा बिरसा मुण्डा की जमीन है.

हमारी गाड़ी खूबसूरत-जानलेवा मोड़, घाटियों से होकर तपकरा की ओर जा रही है. तपकरा का वही स्थल जहां कोइलकारो जल विद्युत परियोजना से विस्थापित हो रहे लोगों ने स्वतंत्र भारत का सबसे बड़ा अहिंसक आंदोलन किया, लेकिन इन्हीं अहिंसक आंदोलनकारियों पर नवगठित झारखंड सरकार की पुलिस ने 2 फरवरी 2001 में गोलीबारी की थी. इस गोलीबारी में छह लोगों की मौत हुई थी और दो दर्जन से ज्यादा लोग घायल हुए थे. मारे गए लोगों में अठारह बरस से भी कम उम्र के लड़के शामिल थे. इस तरह तपकरा गोलीकांड ने यहां की आदिवासी जनता को औपनिवेशिकता की याद दिला दी. अगर आप यहां की सुंदरता को देखेंगे तो यह कहने की भूल न करें कि प्रकृति ने यहां के लोगों को जल, जंगल और जमीन उपहार में दिया है बल्कि यह समझिए कि हजारों सालों की कुर्बानियों से यहां की आदिवासी-सदान जनता ने प्रकृति की रक्षा की है.

तपकरा के साप्ताहिक हाट में जनसभा चल रही थी. बारिश के बावजूद हजारों की संख्या में स्त्री-पुरुष छाता लेकर या हाट की छपरियों में घुसकर गंभीरतापूर्वक जनसभा में शामिल थे. जनसभा में शामिल लोग देश की पहली पंचवर्षीय योजना के समय प्रस्तावित विशाल बांध परियोजना के विरुद्ध चले आंदोलन को याद कर रहे थे. बुजुर्ग वक्ताओं ने आंदोलन की शुरुआत से लेकर उसकी यात्रा की कहानी साझा की. कोइलकारो बांध परियोजना पहली पंचवर्षीय योजना का हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट है. यह दक्षिणी झारखंड की दो बड़ी नदियों कोइल और कारो को जोड़कर डैम बनाने की परियोजना थी. इसके लिए 1955 से सर्वे कार्य शरू हुआ और 1972-73 में जमीन अधिग्रहण की कार्रवाई शुरू हुई. 1974 से व्यवस्थित एवं नियमित रूप से जन आंदोलन शुरू हुआ. आजादी के बाद देश ने औद्योगीकरण और नव निर्माण की ओर बढ़ने के लिए उत्पादन की जिस प्रणाली को अपनाया, जिसके परिणामस्वरूप बड़े-बड़े बांध और कारखाने बनाए गए, उसी की कड़ी में कोइलकारो परियोजना भी प्रस्तावित थी. कोइलकारो